# गाँधी जी के चम्पारण सत्याग्रह का दार्शनिक अनुशीलन

**डॉ0 ममता** [1]

[1](Post Doctoral Fellow,UGC,India), Raghunath Girl's Post Graduate College, Meerut, Uttar Pradesh 250001

**सारांश** : आज का भारत एक उलझन में फँसा है। एक ओर वह अपनी परम्परा को सुरक्षित रखना चाहता है । जिस पर चलकर बच्चे और युवा एक आदर्षवादी नागरिक बने, दूसरी ओर आधुनिक युग के वैज्ञानिक तथ्यों की उपेक्षा भी नही सकता जो देष को विकास की राह पर ले जाएगा। देष की इस स्थिति से ऊपर उठने का एक सामन्य ढंग यह है। यह है कि वह अपनी परम्परा को नए ढंग से प्रतिस्तिथ करे। जिसमें परम्परा और वैज्ञानिकता दोनो का समन्वय हो। इसी सन्दर्भ में गॉधी जी का जीवन उनके विचार उनकी अंतदृश्टि और मानवतावादी दृिश्कोण में परम्परा एवं आधुनिकता के समन्वय की झलक स्पश्ट रूप से दिखाई देती है।

गॉधी जी के अनेक अनदोलनों मे बिहार के चम्पारण जिले में 1917-18 में "चम्पारण-सत्याग्रह" आरम्भ हुआ, जो गॉधी जी का प्रथम सत्याग्रह था। इस सत्याग्रह का कारण था, नील के बगान मे खेती करने वाले किसानों पर अत्याधिक अत्याचार होना।

गॉधी जी ने बताया कि स्वतंत्रता प्राप्ति की पहली "शर्त है-डर से स्वतंत्रता होना। गॉधी जी ने अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने कई स्ंवयसेवकों को किसानों के बीच भेजा। यहाँ किसानों के बच्चों को षिक्षित करने क लिए ग्रामीण विद्यालय खोले गए, लोगों को साफ-सफाई से रहने का तरीका सिखाया गया। चम्पारण के इस गॉधी अभियान से अंग्रेज सरकार परेषान हो उठी। जमीदार के लिए खेती करने वाले किसान अब अपने जमीन के मालिक बने सच पूछा जाए तो गॉधी जी समस्त विचाराधारा दो केन्द्रिय भावस्रोतों से उत्पन हुई हैं। एक भाव "सत्य" और दूसरा "अहिंसा" है। ये दोनो अभिन है। पुन: गॉधी जी अहिंसा को साधन बताते है और सत्य को साध्य। सत्याग्रह का "शाब्दिक अर्थ है 'सत्य का आग्रह' । सत्याग्रह को विवष करने की विधि नही वरन हृदय-परिवर्तन की विधि कहा जाता है। सामान्यता लोग सत्याग्रह को निश्किय प्रतिरोध सममते है। गॉधी जी इसे स्पश्ट करते हुए कहत है कि सत्याग्रह में सक्रियता हिंसात्मक क्रियाओं से कहीं अधिक है क्योंकि सत्याग्रह में हिंसात्मक क्रियाओं का कोई स्थान नही है।

गॉधी जी की यह विचारधारा मानवतावाद का एक अनुठा उदाहरण है, जो यह मानता है, कि मनुश्य अपने भविश्य को स्ंवय रूप दे सकता है। इसका परिणाम यह है कि उसे अब देवी या अप्राकृतिक या आध्यात्मिक "शक्तियो के सहारे पर झुकनें की आवष्यकता प्रतीत नही होती है।

इस प्रकार यदि अणुयुग की विभिशिका से मानव संस्कृति की रक्षा के लिए हिंसा की "ाक्ति को अपदस्थ करके अहिंसा को "शक्ति को प्रतिश्ठित करना है। तो सत्याग्रह के मार्ग के अतिरिक्त प्रतिकार का दूसरा मार्ग नही है।

**Keyword :** चरैवेति-चरैवेति, महात्मा गाँधी, चम्पारण सत्याग्रह, प्रथम सत्याग्रह, हृदय परिवर्तन

"चरैवेति-चरैवेति।" अर्थात् चलते रहो-चलते रहो। यही भारतीय संस्कृति का महामंत्र है। गति प्रगति और विकास से ही राष्ट्रीय, सामाजिक व व्यक्तिगत जीवन की पहचान बनती है, परन्तु यह पहचान सही-सार्थक और साकारात्मक तभी हो सकती है, जब गति , प्रगति व विकास की दिशा भी सही, सार्थक और साकारात्मक हो। दिशा और दशा में गहरा सम्बन्ध है, दिशा के सही होने पर दशा सॅवरती व सुधरती है और दिशा यदि गलत हो तो दशा भी स्वभावत! विनष्ट होने लगती है।

गहन अंधकार के गर्भ से पुण्य प्रकाश का प्रादर्भाव होना ही पुनर्जीवन की नियति है। लगता है जब सब कुछ समाप्त हो गया, तो ऐसे मे आशा और उत्साह का ऐसा प्रकाश पुंज चतकता है कि सब कुछ बदल जाता है। निराशा के घने कुहासे से वही निकल पाता है जो अदम्य साहस, दृढ एवं अविचल संकल्प शक्ति का धनी होता है। जीत की नींव तभी रखाी जा सकती है, जब जज्बा, साहस और सामाश्र्य असीमित हो। संकल्प के धनी और धुन के पक्के भाग्य की अमिट रेखाओं को मिटाकर सौभाग्य की सुनहरी रेखा खींचने वाले **महात्मा गाँधी** का जीवन संघर्ष और चुनौती की ऐसी दास्तान है जिसपर समस्त विश्व को गर्व है।

गाँधी जी के अनेक आन्दोलनों में से **चम्पारण सत्याग्रह** का स्थान अग्रणी है, गाँधी जी के नेतृत्व में बिहार के चम्पारण जिले मे सन् 1917-18 में सत्याग्रह का प्रारम्भ हुआ, जिसे चम्पारण सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। यह गाँधी जी का **प्रथम सत्याग्रह** था।

इस सत्याग्रह की पृष्ठभूमि के अंतर्गत हजारों भूमिहीन मजदूर एवं गरीब किसान खाद्यान के बजाय नील और अन्य नकदी फसलों की खेती करने के लिए वाध्य हो गये थे। वहाँ नील की खेती करने वाले किसानों पर बहुत अत्याचार हो रहा था। अंग्रेज और बगान मालिक बहुत शोषण कर रहे थे।

महात्मा गाँधी ने अप्रैल 1917 में **राजकुमार शुक्ला** के निमंत्रण पर चम्पारण के नील कृषको की स्थिति का जायजा लेने वहाँ पहँुचे। किसानों ने अपनी सारी समस्याएँ बताई। पुलिस सुपरिटेंडंडट ने गाँधी जी को जिला छोड़ने का आदेश दिया। गाँधी जी ने आदेश मानने से इंकार कर दिया। जिससे गाँधी जी को कोर्ट में हाजिर होना पड़ा। लेकिन फैसला स्थगित कर दिया गया। अपने प्रथम सत्याग्रह का सफल नेतृत्व उनका पहला उद्ेश्य था। उन्होने बताया कि स्वतंत्रता प्राप्ति की पहली शर्त है- **डर से स्वतंत्र होना।** गाँधी ने अपनी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने कई स्वयंसेवकों को किसानों के बीच में भेजा। यहाँ किसानों के बच्चों को शिक्षित करने के लिए ग्रामीण विद्यालय खोले गये। लोगों को साफ-सफाई से रहने का तरीका सिखाया गया। सारी रीति विधियाँ गाँधी जी के आचरण से मेंल खाती थीं। इस दौरान गाँधी जी ने राजेंद्र बाबू, आचार्य कृपलानी और अनुग्रह बाबू जैसे सहयोगियों को भोजन बनाना एवं घर के अन्य काम खुद करना सीखा दिया था। स्वयंसेवकों ने मैैला ढोने, धुलाई, झाड़ू-बुहारी तक का काम किया। चंपारण के इस ऐतिहासिक संघर्ष में

डॉ0 राजेंन्द्र प्रसाद, डॉ अनुग्रह नारायण सिंह, आचार्य कृपलानी , बृजीकिशोर, महादेव देसाई, नरहरि पारिख समेत चंपारण के किसानों ने अहम भूमिका निभाई।

चंपारण के इस गाँधी अभियान से अंग्रेज सरकार परेशान हो उठी। सारे भारत का ध्यान अब चंपारण पर था। सरकार ने मजबूर होकर एक जाँच आयोग नियुक्त किया, गाँधी जी को भी इसका सदस्य बनाया गया। परिणाम सामने था। कानून बनाकर सभी गलत प्रथाओं को समाप्त कर दिय गया। जमींदार के लाभ के लिए नील की खेती करने वाले किसान अब अपने जमीन के मालिक बने। गाँधी जी ने भारत में सत्याग्रह की पहली विजय का शंख फूँका। चम्पारण ही भारत में सत्याग्रह की जन्म स्थली बना।

चम्पारण सत्याग्रह की नींव-नील की खेती से प्रारम्भ होती है अत: नील की खेती पर दृष्टिपात करना युक्तिसंगत होगा।

नील एक रंजक है। यह सूती कपड़ो में पीलेपन से निजात पाने के लिए प्रयुक्त एक उत्पादन है। यह चूर्ण (पाउडर) तथा तरल दोनों रूपों में प्रयुक्त होता है। यह पादपों से तैयार किया जाता है किन्तु इसे कृत्रिम रूप से भी तैयार किया जाता है।

भारत में नील की खेती बहुत प्राचीन काल से होती आई है। इसके अलावा नील रंजक का भी सबसे पहले से भारत में ही निर्माण एवं उपयोग किया गया।

नील का पौधा दो-तीन हाथ ऊँचा होता है। पत्तियाँ चमेली की तरह टहनी के दोनों और पंक्ति में लगती हैं पर छोटी-छोटी होती है। फूल मंजरियों में लगते है। लंबी बबूल की तरह फलियाँ लगती है।

नील के पौधे की 300 के लगभग जातियाँ होती हैं पर जिनसे यहाँ रंग निकाला जाता है वे पौधे भारतवर्ष के है और अरब मिस्र तथा अमेरिका में भी बोए जाते हैं। भारतवर्ष ही नील का आदिस्थान है और यहीं सबसे रंग निकाला जाता थां 80 वीं ईसवी में सिंघ के किनारे के एक नगर से नील का बाहर भेजा जाना एक प्राचीन युनानी लेखक ने लिखा है। ईसा की 15 वीं शताब्दी में जहाँ यहाँ से नील युरोप के देशों में जाने लगा तब से वहाँ के निवासियों का ध्यान नील की और गया। सर्वप्रथम हॉलैण्ड में नील का काम शुरू हुआ और कुछ दिनों तक वे नील की रंगाई के लिए युरोप भर में निपुण समझे जाते थे। नील के कारण जब वहाँ कई वस्तुओं के वाणिज्य को धक्का पहुँचने लगा, तब फ्रांस, जर्मनी आदि कानुन द्वारा नील की आयात बंद करने पर विवश हुए। सन् 1060 तक इंग्लैण्ड में भी नील का जाना बंद रहा। बाद में बेलजियम से नील का रंग बनाने वाले बुलाए गए, जिन्होनें नील का काम सिखाया। पहले पहल गुजरात से नील युरोप जाता था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जब नील के काम की और ध्यान दिया तब बंगाल बिहार में नील की खेती में उन्नति हुई।

चम्पारण जिले में अंग्रेजों ने जबरन ही किसानों से नील की खेती करा कर के मुनाफा वसुल करना प्रारम्भ किया। इसी के विरोध में महात्मा गाँधी ने सत्याग्रह रूपी अस्त्र धारण किया।

नील विद्रोह किसानों द्वार किया गया एक आन्दोलन था जो बंगाल के किसानों द्वारा सन् 1842 में किया गया था। किन्तु इस विद्रोह की जड़ें आधी शताब्दी पुरानी थीं, अर्थात् नील कृषि अधिनियम (Indigo Plantation act) का पारित होना। इस विद्रोह के आरम्भ में नदिया जिले के किसानों ने 1859 के फरवरी-मार्च में नील का एक भी बीज बोने से मना कर दिया। यह आन्दोलन पूरी तरह से अहिंसक था तथा इसमें भारत के हिन्दू और मुसलमान दोनों ने बराबर का हिस्सा लिया। सन् 1860 तक बंगाल में नील की खेती लगभग ठप पड़ गई। सन् 1860 में इसके लिए एक आयोग गठित किया गया।

बिहार के बेतिया और मोतिहारी में 1205-08 तक उग्र विद्रोह हुआ। ब्लूम्सफिल्ड नामक अंग्रेज की हत्या कर दी गई जो कारखानें का प्रबन्धक था। अन्ततः 1227-27 में गांधी जी के नेतृत्व में चम्पारन सत्याग्रह हुआ जिसके फलस्वरूप 'तिनकठिया' के अन्तर्गत किसानों को 3/20 (बीस कटठ में तीन कटठ) भू-भाग पर नील की खेती करनी पड़ती थी। अब मन में सिर्फ एक ही सवाल उठता है कि क्या ये सब जो यहाँ लिखा है क्या ये सब ठीक है के नहीं। अगर ये सब ठीक नहीं है तो यह प्रार्थियों के साथ एक बहुत बड़ा धोखा है।

नील विद्रोह (चंपारन विद्रोह)- सर्वप्रथम यह विद्रोह बंगाल 1859-61 में शुरू हुआ था, पूर्व में भी इस विद्रोह को भारतीयों द्वारा कुचल दिया गया था। जब गांधी जी ने चंपारन विद्रोह किया तो पाया कि वहाँ के किसानों को ब्रिटिश सरकार जबरन 15 प्रतिशत भू-भाग पर नील की खेती करने के लिए बाध्य कर रही थी, तथा 20 में से 3 कट्टे ?

सरकार जबरन 15 प्रतिशत भू-भाग पर नील की खेती करने के लिए बाध्य कर रही थी, तथा 20 में से 3 कट्टे किसानों द्वारा यूरोपीयन निलहों को देना होता था। जिसे आज हम तिनकठिया प्रथा के रूप में भी जानते हैं। भारतीय किसान जिसकी दशा पहले से ही बहुत खराब थी ऐसी विषम परिस्थितियों में ब्रिटिश सरकार की यह हुकुमत उनके लिए परेशानी का सबब बन गयी। जब 1917 में गांधी जी ऐसी विषम परिथितियों से अवगत हुए तो गांधी जी ने बिहार गये और ब्रिटिश हुकुमत के खिलाफ अपना पहला सत्याग्रह प्रदर्शन कर दिया। ब्रिटिश सरकार ने उनके खिलाफ उन्हे वहां से निकालने का फरमान जारी किया किन्तु गांधी जी और उनके सहयोगी वहीं जुटे रहे और अन्ततः ब्रिटिश हुकुमत ने अपना आदेश वापिस लिया और गांधी जी द्वारा निर्मित समिति से बात करने के लिए सहमत हो गयी। फलतः गांधी जी ने बिहार (चंपारन) के किसानों को दयनीय परिस्थितियों से इस प्रकार शासन को अवगत करवाया की वह मजबूरन इस प्रकार शासन को अवगत करवाया की वह मजबूरन इस प्रकार के कृत्य को रोकने के लिए मजबूर हो गये।

सच पूछा जाए तो गाँधी जी के समस्त विचारधारा दो केन्द्रिय भाव स्त्रोतों से उत्पन्न हुई है। एक भाव है 'सत्य' और दूसरा "अहिंसा" है ये दोनों अभिन्न हैं। सत्य पर किए गए प्रयोगो से वे अपने आप अहिसा पर आ गए। वे कहते है कि "I have nothing new to Teach the World. Truth and Non-Violence are as old as the hills. All I have done is to try experiments in both on as Vast a Scale as I could. Life and its problem have thus become to me so many experiments in the practice of truth and non-Violence..... In fact it was in the course of my pursuit of Truth that I discovered Non-Violence".

(N.K.Bose, Selection from Gandhi, Ed. P-13)

पुन: गाँधी जी अहिंसा को साधन कहते है और सत्य को साध्य। गाँधी जी ने सत्य पर किए गए विभिन्न प्रयोगो के आधार एवं माध्यम से अहिंसा के पालन के ढंग को विकसित किया, तथा उसे उन्होंने सत्याग्रह कहा।

सत्याग्रह का शाब्दिक अनुवाद है 'सत्य का आग्रह' 'सत्य की शक्ति'। इसे गाँधी जी ने कभी-कभी आत्मशक्ति (Soul-Force) तथा प्रेम शक्ति (Love-Force) कहा है। गाँधी जी कहते है!- "It is impossible for those who consider Themselves weak to apply this force. Only those who realise that these is Something in man which is Superior to the brute nature in him, and that the latter always yields to it, can effectively be Passive resisters. This force is to violence and therefore to all tyranny, all injustice what light is to darkness."

(N.K. Bose. selections from Gandhi Ed. P.P-218-19)

अर्थात जैसा कि **'सत्याग्रह'** शब्द से ही स्पष्ट है कि यह **'सत्य का आग्रह'** है। गाँधी जी के अनुसार सत्य तो ईश्वर है अत: सत्याग्रह 'ईश्वरीय आग्रह' है। व्यवहारिक दृष्टि से इसका अर्थ हो जाता है कि 'सत्य के प्रति पूर्ण निष्ठा'। अत: सत्याग्रह एक प्रकार से **धार्मिक आचरण** है।

सत्याग्रह इस विश्वास पर आघृत है कि ईश्वर एक है, तथा वही हर मनुष्य व जीव में निवास करता है हम जिसका विरोध करते है उसमें भी वही ईश्वर निवास करता है। इसलिए सत्याग्रह **सर्वव्यापी प्रेम** का दूसरा नाम है।

"Nations like individuals are built through the agony of the cross and in no other way, joy comes not out of infliction of pain on others, but out of Pain voluntarily borne by oneself".

(Young India, 31-12-1931)

इस कारण सत्याग्रह को **विवश करने** की विधि नहीं वरन् **हृदय परिवर्तन** की विधि कहा जाता है। सत्याग्रही विरोधी के हृदय को प्रभावित करने का प्रयत्न करता है। उसमें निहित अच्छाई का जाग्रत करना चाहता है।

गाँधी जी कहते है कि सत्याग्रह में असीम धैर्य की आवश्यकता होती है व्यक्ति या विरोधी अपनी मूल को एकाएक नही समझ पाता, उसके लिए उसे समय चाहिए। वह क्रोध, आवेग तथा दूेष से वशीभूत 'अशुभ' करता है, तो उसे पूर्ण शांत होने का भी पूरा अवसर मिलना चाहिए।

चम्पारण सत्याग्रह में इसका स्पष्ट प्रभाव दिखाई पड़ता है, जहाँ एक ओर किसानों का धैर्य था वहीं दूसरी ओर अंग्रेजो की विवशता।

सामान्यतया सत्याग्रह को लोग निष्क्रिय प्रतिरोध (Passive resistance) समझते है। गाँधी जी इसे स्पष्ट करते हुए कहते है कि सत्याग्रह में सक्रियता हिंसात्मक क्रियाओं से कहीं अधिक है, क्योकि सत्याग्रह में हिंसात्मक क्रियाओं का कोई स्थान नहीं है।

"On passive resistance there is always present and idea of harassing the other party and these is simulataneous readiness to undergo any hardship entailed upon us by such activity, while in setayagrah there is not the remotest idea of injuring the appenent."

(N.K. Bose selection from Gandhi. Ed. P-221).

गाँधी जी का मानना है कि 'प्रेम अहिंसा' तथा आत्मबलिदान की क्रियाओं के द्वारा अशुभ प्रवृति को पूर्णतया निष्क्रिय कर दिया जाता है। तथा उसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक तथा पूर्णतया सार्वभौम है। इसी कारण चम्पारण सत्याग्रह मं किसानों में असंतोष के स्थान पर संतोष और धैर्य की भावना बलवती हो गयी थी, जिससे गाँधी जी को सत्याग्रह करने में अत्यन्त सहायता मिली।

**आचार्य विनोबा कहते है** "बुराई का प्रतिकार मत करो बल्कि विरोधी की समुचित चिंतन में सहायता करो। शुद्ध विचार करने, सोचने समझने, व्यक्तिगत जीवन में उसका अमल करने और दूसरो को समझाने में ही हमारी लक्ष्य की पूर्ति होनी चाहिए।"

वस्तुत: सत्याग्रह कुछ नया नही है बल्कि कौटुबिंक जीवन का राजनीतिक जीवन में प्रसार मात्र है। गाँधी जी ने सत्याग्रह के विचार का राजनीतिक जीवन में सामूहिक प्रयोग किया। वर्तमान में लोकतंत्र में सारा काम लोक की राय से लोक प्रतिनिधियों के माध्यम से चल रहा है इसलिए सत्याग्रह के लिए कोई स्थान नही है। विनोबा भावे जी कहते है लोकतंत्र में जब विचार स्वतंत्र और विचार प्रधान के लिए पूरा अवसर है, तो सत्याग्रह को किसी प्रकार के दबाव, घेराव अथवा बंद का रूप नही ग्रहण करना चाहिए।

आज दुनिया के विभिन्न कोनो में सत्याग्रह एवं अहिंसक प्रतिकार के प्रयोग निरंतर चल रहे है। द्वितीय महायुद्ध में हजारों युद्धविरोधी पैसेफिग्ट सेना में भरती होने के बजाय जेलों में गए। बट्रेंड रसेल जैसे दार्शनिक युद्धविरोधी सत्याग्रहो के कारण जेल के सलाखों के पीछे बंद हुए थे। अणुशस्त्रो के कारखाने आल्डर मास्टन से लंदन तक प्रतिवर्ष 60 मील की पदयात्रा कर हजारों शांतिवादी अुणशस्त्रो के प्रति अपना विरोध प्रकट करते हैं। नीग्रो नेता मार्टिन लूथर किंग के बलिदान की कहानी सत्याग्रह संग्राम की अमर गाथा बन गई हैं। सत्याग्रह का प्रयोग अभी अंतराष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए नहीं हुआ है। परन्तु यदि अणुयुग की विभीषिका से मानव संस्कृति की रक्षा के लिए हिंसा की शक्ति को अपदस्थ करके अहिंसा की शक्ति को प्रतिष्ठित होना है, तो सत्याग्रह के इस मार्ग के अतिरिक्त प्रतिकार का दूसरा मार्ग नहीं है, इस अणुयुग मे शस्त्र का प्रतिकार शस्त्र से नही हो सकता।

खोखली होती दुनिया ने अपने मायाजाल में सभी को समेट लिया है भारत हो या चीन, दक्षिण अफ्रिका या ब्राजील, सभी इसी भंवर में है। ऐसी विश्व व्यवस्था को बचाने की कोशिश की जा रही है। इस अंधियारे में भारत के नन्हे पड़ोसी भूटान ने अपनी तरह से इस मायावी बुद्धि एवं विकास को अस्वीकारा है। इस छोटे से देश ने अपने देशवासियों के जीवन में खुशहाली मापने के लिए सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता को मानक बनाया है। यह पहल अनुकरणीय है जिसमें मानव जीवन की कुशलता, समृद्धि एवं सुख के लिए भौतिक उपलब्धियों को एकमात्र पैमाना नही स्वीकार किया गया है।

निष्कर्ष : भारत को अपने विकासपथ के पुनर्मल्याकंन की आवश्यकता है। यहाँ के जन-मन एवं राजनीतिक व्यवस्था को फिर से महात्मा गाँधी के विचारों पर मनन करना चाहिए, जिन्होंने आडम्बर, झूठ के विकल्प में सत्य, शोषण व दमन के विकल्प में सत्याग्रह सुझाया था। जिसकी आज जरूरत है। विश्व को परिवार बनाएँ, न कि विश्व को बाजार में बदल दें। भूमंडलीयकरण अवश्य हो लेकिन उसका आधार सांस्कृतिक संवेदना बने न कि आर्थिक साम्राज्य का उपनिदेश।

References:

i) Ahmed, Razi. 1966. Indigo unrest in Champaran and Mahatma Gandhi (1867-1918). Unpublished Ph.D. thesis (history). University of Patna . Google Scholar

ii) Bailey, F.G. 1967. The peasant view of the bad life. Science and culture (Calcutta). Google Scholar

iii) Beames, John. 1961 (reprint). Memoirs of a Bengal civilian. London. Google Scholar

iv) Brown, Judith. 1972. Gandhi's rise to power. Cambridge . Google Scholar

v) Chaudhuri, B.B. 1964. Growth of commercial agriculture in Bengal, 1757-1900 . Calcutta. Google Scholar

vi) Chaudhury P.C. Roy 1963 ( 2nd ed. ). Gandhiji's first struggle in India. Ahmedabad. Google Scholar

vii) Datta, K.K. 1957. History of the freedom movement in Bihar. Vol. 1 ( 1857-1928 ). Patna. Google Scholar

viii) dutt, R.C. 1874. The peasantry of Bengal. Calcutta . Google Scholar

ix) Gandhi, M.K. 1940 ( 2nd ed. ). An autobiography or the story of my experiments in truth. Ahmedabad. Google Scholar

x) Kling, Blair B. 1966. The blue mutiny: the indigo disturbances. Philadelphia. Google Scholar

xi) Kripalani, J.B. 1970. Gandhi, his life and thought. New Delhi . Google Scholar